मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

एम्स खोलने का छलावा 3
कश्मीर: असली मुद्दे नज़रअंदाज 4
जवानों का लहू मांगता जवाब 5
मोदी सउदी प्रिंस के गले पड़ गए 6
आईपीएस जसवीर सिंह का निलंबन 8

वर्ष 34 अंक -15 फ़रीदाबाद 24 फ़रवरी-2 मार्च 2019 फोन - 9999595632 ₹ 2.50

अवतार-कृष्णपाल, यानी सांपनाथ बनाम नागनाथ

अवतार भड़ाना या कृष्णपाल गुर्जर... फरीदाबाद की जनता को उल्लू बनाने की राजनीति....एक को तो चुनना ही पड़ेगा

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: लोकसभा चुनाव 2019 में जब गिनती के दिन बचे हैं, अवतार सिंह भड़ाना ने भाजपा का दामन छोड़ कर कांग्रेस का दामन थाम लिया है और इस सिर्फ एक घटनाक्रम से फरीदाबाद लोकसभा सीट का चुनाव एक बार फिर से दिलचस्प होने जा रहा है। हालांकि कुल निचोड़ ये है कि फरीदाबाद की बदनसीब जनता को फिर से दो ठगों में से किसी एक ठग को चुनना है। एक नागनाथ है तो दूसरा सांपनाथ है। अवतार भड़ाना जहां इस सीट पर तीन बार सांसद रहे, वहां कृष्णपाल गुर्जर पहली बार 2014 में मोदी लहर में जीते। लेकिन फरीदाबाद की लुटिया डुबाने में से कोई पीछे नहीं रहा।

कांग्रेस में आने के बाद ही अवतार ने सेक्टर 19 में अपने पुराने दफ्तर को फिर से चालू कर दिया है। उधर, कृष्णपाल गुर्जर जो पिछले साढ़े चार साल तक जनता से दूर रहे, न अब सिर्फ अपने सेक्टर 28 फरीदाबाद स्थित घर और दफ्तर में बैठ रहे हैं बल्कि जनता से मिल रहे हैं। उनकी कोठी पर बैठकों के दौर तेज हो गए हैं। कृष्णपाल के दफ्तर में बैठने वाला बाठला रोजाना अपने गुर्गों के साथ मीटिंगों के दौर कर रहा है, जिसमें जीतने के मंसूबे रात की महफिल सजने तक बनते रहते हैं।

अवतार भड़ाना पुराना दलबदलू

अंगूठा छाप अवतार फरीदाबाद लोकसभा सीट से 1991-1996, 2004-2009, 2009-2014 में कांग्रेस की टिकट पर सांसद रहे। लेकिन 2014 में जब मोदी लहर में कृष्णपाल गुर्जर ने अवतार को मात दी तो अवतार के होश गुम हो गए। वजह यह है कि अवतार भड़ाना खानदान के उल्टे-पुल्टे व काले धंधे इतने ज्यादा फैले हुए हैं कि यह खानदान बिना सत्ता के नहीं रह सकता। 2014 में जब भाजपा सशक्त होकर उभरी तो अवतार भड़ाना ने भाजपा में घुसने की तरकीबें शुरू कीं। कांग्रेस की टिकट को पैसे से खरीदने जैसा आरोप का सामना करने वाले अवतार ने अमित शाह के लिए अपनी तिजौरी खोल दी। बताया जाता है कि अमित शाह की सिफारिश पर अवतार को बिजनौर के पास मीरापुर से 2017 में यूपी विधानस चुनाव में भाजपा का टिकट मिल गया। फिर अवतार ने मंत्री बनने के लिए हाथपैर मारे लेकिन योगी आदित्यनाथ के पास उसकी दाल नहीं गली।

अवतार सिंह भड़ाना खानदान के पास पत्थर खदानें थी और उसी के पैसे से यह लोग धन कुबेर बने। किसी दौर में मीडिया ने अवतार को माइन्स माफिया जैसे जुमलों से भी नवाजा है। लेकिन जब कांग्रेस में पैसे लेकर टिकट बांटे जाते थे तो यह शख्स पैसे से कांग्रेस टिकट ले आया और देखते ही देखते सांसद बन बैठा। इसके बाद भी कांग्रेस का टिकट इसे आसानी से मिलता रहा और यह जीतता रहा। इसका दूसरा भाई करतार सिंह भड़ाना इसी के नक्शेकदम पर चलते हुए कभी किसी पार्टी में तो कभी किसी पार्टी की शोभा बढ़ाता रहा है।

कांग्रेस में इसकी पैरोकारी करने वाला शख्स गुलाम नबी आजाद है। जब जब गुलाम नबी आजाद मजबूत हुआ, तब-तब अवतार को कांग्रेस की टिकट मिलती

शेष पेज तीन पर

लोकसभा चुनाव की आई बहार : हर्ष कुमार ने भी भरी बड़ी हुंकार

हथीन-पलवल (म.मो.) ज्यों-ज्यों लोकसभा चुनाव निकट आते जा रहे हैं, राजनीतिक पार्टियों एवं उनके नेताओं की सरगर्मियां तेज होती जा रही हैं सभी नेता अपने-अपने राजनीतिक भविष्य को उज्जवल एवं सुनिश्चित करने के लिए तरह-तरह के जोड़-तोड़ में लगे हैं डूबते जहाज को छोड़कर नेतागण दूसरे जहाज अथवा छोटी किश्तियों की ओर लपक रहे हैं।

इस क्रम में फरीदाबाद लोकसभा में कांग्रेसी टिकट पर सांसद बनने की आशा किये अवतार भड़ाना भरी-पूरी भाजपा छोड़कर कांग्रेस में लौट आये हैं तो पूर्व मंत्री हर्ष कुमार ने भी भाजपा त्याग कर नई नवेली जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया है। ओमप्रकाश चौटाला पार्टी से अलग हुए उनके पोते दुष्यंत द्वारा खड़ी की गई इस नवनिर्मित पार्टी ने जींद उपचुनाव में अपनी अच्छी खासी उपस्थिति दर्ज करायी हैं हरियाणा में जेजेपी के बढ़ते प्रभाव व भाजपा के डूबते जहाज को त्यागने का उचित समय भांपते हुए हर्ष कुमार ने 17 फरवरी को हथीन में विशाल रैली का आयोजन किया। इसी रैली में दुष्यंत ने उन्हें अपनी पार्टी में शामिल करने की औपचारिक घोषणा की।

यद्यपि हर्ष ने लोकसभा चुनाव लड़ने की कोई औपचारिक घोषणा तो नहीं की लेकिन नेताओं की भाषा में उन्होंने कहा कि जैसा पार्टी का आदेश होगा। उन्होंने यह भी कहा कि विधानसभा के लिये तो उनकी तैयारी पूरी है जरूरत पड़ी तो लोकसभा की भी की जा सकती है। दुष्यंत के स्वागत में जैसी भारी-भरकम रैली की गयी और जिस तरह से से उन्हें पलवल से हथीन तक हजारों मोटर साइकिलों के काफि ले के साथ रैली स्थल तक ले जाया गया, उसे देखते हुए दुष्यंत के पास बतौर लोकसभा उम्मीदवार कोई और हो भी नहीं सकता।

मुख्यतया जाति व साम्प्रदायिकता के आधार पर लड़े जाने वाले इन चुनावों में जो समीरण बनते नजर आ रहे हैं उनमें दुष्यंत को हर्ष से बेहतर कोई उम्मीदवार नजर आ भी नहीं सकता। समझा जा रहा है कि भाजपा के कृष्णपाल गूर्जर के मुकाबले में इस बार फिर से कांग्रेस उसी अनपढ़ अवतार सिंह गूजर को मैदान में उतारने जा रही है जिसे कृष्णपाल ने 2014 में धूल चटाई थी। जैसी कि संभवाना है कांग्रेस फिर से उसी हारे हुए घोड़े पर दांव लगाने वाली है क्योंकि अनपढ़ होते हुए भी उसके पास वोट खरीदने के लिए अथाह वोट तथा वोटरों को बेवकूफ बनाने का अच्छा खासा हुनर है।

दूसरी ओर राष्ट्रीय स्तर पर मोदी का तथाकथित 56 इंची सीना सारे देश ने देख लिया, सच बोलना उन्होंने कभी सीखा ही नहीं। बीते पांच साल में वे और उनकी पार्टी पूरी तरह से बेनकाब हो चुकी है तो स्थानीय स्तर पर उनके सिपहसलार कृष्णपाल को तो जनता ने भुगता सो भुगता उनके शकुनि रूपी मामा को भी इलाके के लोगों ने बड़ी मुश्किल से झेला है।

इन हालात में जाटों व मेवों में अपनी अच्दी पैंठ के आधार पर दुष्यंत हर्ष कुमार पर दांव खेल कर संसद में अपनी यह सीट तो मान ही सकते हैं। वैसे भी हाल फिलहाल मानने में जाता भी क्या है, बाकी तो समय बतायेगा।

जाति से गैर जाट न होते तो क्या डीजी पुलिस बनाये जाते मनोज यादव

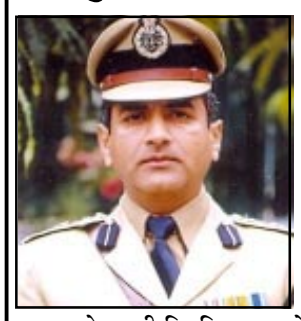

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

मनोज यादव को हरियाणा का नियमित डीजीपी लगाने के साथ प्रदेश पुलिस में दिहाड़ीदार पुलिस चीफ का साढ़े चार माह का दौर समाप्त हुआ। 30 सितम्बर, 2018 को बलजीत संधू के रिटायर होने के बाद पहले संधू के चार माह और फिर केपी सिंह को 20 दिन दिहाड़ी पर रखा गया और इससे पुलिस विभाग में अनिश्चितता छाई रही।

कह सकते हैं कि यादव की छवि बेशक एक कार्यकुशल और ईमानदार अफसर की रही है। लेकिन इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए कि खट्टर सरकार ने उनकी नियुक्ति इन गुणों की वजह से की है। चुनाव के दौर में उनका यादव जाति (गैर जाट) का होना और उन पर मोदी के विश्वासपात्र एनएसए अजित डोभाल का वरदहस्त होना काम आया है।

अपने से आधा दर्जन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को फलांग कर डीजीपी बने यादव 16 वर्ष पूर्व पुलिस अधीक्षक रैंक में होते हुए ही राज्य से प्रतिनियुक्ति पर केंद्र सरकार के इंटेलिजेंस ब्यूरो में गए थे। जबकि उनके तमाम वरिष्ठ अधिकारी, जिनकी अनदेखी हुयी है, इस दौरान विभिन्न वरिष्ठ पदों पर राज्य में सेवा देते रहे हैं। इस लिहाज से, इतने लम्बे अरसे के बाद सीधे डीजीपी बन कर वापसी करने में यादव को नए सिरे से जमना होगा।

दिलचस्प बात यहाँ यह भी है कि यह सारा राजनीतिक नियुक्ति का खेल सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार बने यूपीएससी पैनल और डीजीपी के दो वर्ष के कार्यकाल की आड़ में खेला गया है। यूपीएससी से पैनल बनवाते समय जान-बूझ कर दो वर्ष की सेवा बची रहने का प्रावधान डाल दिया गया ताकि पैनल में बेहद जूनियर मनोज यादव का नाम डाला जा सके और उनके आधा दर्जन वरिष्ठों को इस आधार पर बाहर रखा जा सके। जबकि इससे पहले केंद्र की मोदी सरकार ने उन केन्द्रीय पुलिस बलों एवं संगठनों में, जहाँ चीफ के दो वर्ष के कार्यकाल का नियम है, इस आधार पर पैनल नहीं बनाये। वहां तो ऐन सेवा निवृत्ति के दरवाजे पर खड़े अफसर भी डीजी नियुक्त किये गए थे।

आशंका है कि इस विसंगति के चलते यादव की नियुक्ति को अदालत में चुनौती न दे दी जाय। कुछ ही दिनों पूर्व पंजाब राज्य में भी नए नियुक्त डीजीपी दिनकर गुप्ता का मामला कुछ ऐसा ही है। दोनों ही राज्यों में डीजीपी के पद के लिए चयनित अफसर पैनल में सबसे नीचे यानी तीसरे नंबर पर हैं। यह भी वरिष्ठता की परंपरा की धज्जियाँ उड़ाने वाली बात है। लेकिन राजनीतिक गोटियाँ बिठाने वालों को इन मूल्यों से क्या भला लेना देना।

समय ही बताएगा कि अच्छी छवि के मालिक मनोज यादव, खट्टर सरकार के राजनीतिक एजेंडे पर कहाँ तक खरे उतर पायेंगे ? और कहीं वे सीधे रास्ते पर ही चले तो उन्हें एनएसए अजित डोभाल के डंडे से कैसे 'काबू' में रखा जाएगा ?